प्रातः क्लास 5/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ अपने रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चों की बुद्धि में यह जरूर है कि अब जाना है। भक्तों की बुद्धि में यह नहीं रहता। तुम जानते हो यह 84 का चक्र अब पूरा हुआ। यह बहुत बड़ा बेहद का माण्डवा अथवा स्टेज है। अनलिमिटेड स्टेज है। वह सब होते हैं लिमिटेड स्टेजस जिसमें खेल–पाल करते हैं। अनलिमिटेड बड़ी भारी स्टेज है। अभी इस पुराने माण्डवे को छोड़ घर जाने का है। अपवित्र आत्माएँ तो जा नहीं सकती। पवित्र जरूर बनना है। अभी इस पुराने खेल का अन्त हैं अपरमअपार दुखों की अब पिछाड़ी है। इस समय यह सभी माया का पाम्प है। जिसको मनुष्य स्वर्ग समझते हैं। कितने महल–माडियाँ मोटरें आदि हैं। इसको कहा जाता है माया का कम्पटीशन। नर्क की है स्वर्ग के साथ कम्पीटिशन। अल्प काल लिए सुख है। यह है माया की लालच ड्रामा अनुसार। कितने ढेर मनुष्य हो गये हैं। पहले तो जरूर एक आदि सनातन धर्म ही था। अभी तो माण्डवा फुल भर गया है। बाप समझाते हैं अब यह चक्र पूरा होता है। अब सब तमोप्रधान हैं। सृष्टि भी तमोप्रधान हो गई है। यह रहने का स्थान भी तमोप्रधान है। फिर सतोप्रधान होना है। सारी सृष्टि नई चाहिए। नई सृष्टि सो पुरानी, पुरानी सो नई। यह तो अनगिनत बार चलता आया है। अनादि खेल है। कब शुरू हुआ यह नहीं कह सकते। अनादि चलता ही रहता है। इस रचना के आदि मध्य अन्त को तुम बच्चे ही जानते हो। और कोई नहीं जानते। सभी नास्तिक हैं। तुम भी इस ज्ञान मिलने के पहले इस शरीर में कुछ भी नहीं जानते थे। न बाप को न रचना के आदि मध्य अन्त को जानते थे। देवताएँ भी नहीं जानते। सिर्फ तुम पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण ही जानते हो। फिर यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। बाप ने सुखी धर्म का मालिक बनाया बाकी और क्या चाहिए। बाबा से जो पाना था सो पा लिया। बाकी कुछ पाने लिये रहता नहीं है। तो बाप पूछते हैं तुम ही सबसे जास्ती पतित बने हो ना। पहले2 तुम ही आये थे पार्ट बजाने। बहुत जन्म भी तुमने लिये हैं। तुमको ही पहले जाना पड़ेगा। यह चक्र है ना। पहले2 आवेंगे तो पहले माला पिरावेंगे। यह रूद्र माला है ना। धागे में सारी दुनिया के मनुष्य पिराये हुए हैं। धागे से निकल फिर ऐसे ही धागे में पिराये जावेंगे। बहुत बड़ी माला है। शिवबाबा को कितने ढेर बच्चे हैं। पहले2 तुम देवताएँ आते हो। यह है बेहद की माला जिसमें सभी मणियों मिसल पिराये हुए हैं। रूद्र माला और विष्णु की माला गाई जाती है। प्रजापिता ब्रह्मा की माला है नहीं। तुम ब्रह्माकुमार कुमारियों की माला होती नहीं; क्योंकि तुम चढ़ते गिरते हो। हार खाते हो। घड़ी2 माया गिरा देती है। इसलिए रूद्रमाला सो विष्णु की माला बनती है। यूँ तो जब प्रजापिता ब्रह्मा का जब समझाते हैं तो उनका भी यह सिजरा है। जब पास हो जाते हैं तो कहेंगे ब्रह्मा की भी माला है। सिजरा बना हुआ है। इस समय माला नहीं बन सकती; क्योंकि आज पवित्र बनते हैं कल माया थप्पर मार कला काया ही निकाल देती। की कमाई चट हो जाती। टूट पड़ते हैं। कहाँ से गिरते हैं विचार करो। बाप तो विश्व का मालिक बनाते हैं उनकी श्रीमत पर चलने से तुम ऊँच पद पा सकते हो। हार खा लेते तो खलास। काम विकार महाशत्रु है। उनसे हार न खानी है। बाकी सभी विकार हैं बाल–बच्चे। बड़ा शत्रु है विकार। इनके ऊपर ही जीत पानी है। काम पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। यह 5 विकार आधा कल्प के दुश्मन हैं। वह भी छोड़ते नहीं हैं। सभी चिल्लाते हैं क्रोध करना पड़ता है; परन्तु दरकार क्या पड़ी है। प्यार से काम हो सकता है। चोर को भी अगर प्यार से समझावेंगे तो वह झट सच कह देंगे। बाप कहते हैं मैं प्यार का सागर हूँ ना तो तुम बच्चों को भी प्यार से काम लेना है। भल कोई भी पोजीशन हो। बाबा के पास मिलिट्री वाले भी आते हैं। उन्हों को भी बाबा समझाते हैं तुम स्वर्ग में जाना चाहते हो तो सिर्फ शिवबाबा को याद कर गोली चलावेंगे तो तुम स्वर्ग में जा सकते हो; क्योंकि उन्हों को कहा जाता है युद्ध के मैदान में जो मरेंगे वह स्वर्ग में जावेंगे। वास्तव में युद्ध का मैदान तो यह है। वह तो लड़ाई करते2 मर जाते तो फिर वहाँ ही जाकर जन्म लेते हैं; क्योंकि संस्कार ले जाते हैं ना। स्वर्ग में जा न सके। तो बाबा उन्हों को समझाते थे शिवबाबा को याद करने से तुम स्वर्ग में जा सकते हो; क्योंकि स्वर्ग की स्थापना हो रही है।

शिवबाबा की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। यह थोड़ा भी ज्ञान मिला ना। तो अविनाशी ज्ञान का विनाश नहीं होता। तुम यह प्रदर्शनी आदि करते हो तो भी कितने प्रजा बनते हैं। तुम रूहानी सेना हो ना। इसमें कमान्डर, मेजर, कैप्टन आदि थोड़े होते हैं। प्रजा तो बहुत बनती है। जो अच्छी रीति समझते हैं तो कुछ न कुछ अच्छा पद पाते हैं। उनमें भी फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड ग्रेड होते हैं ना। तुम भी शिक्षा देते रहते हो। कोई तो बिल्कुल आप समान बन जाते हैं कोई तुम से भी ऊपर जा सकते हैं। देखा जाता है एक दो से ऊपर चले जाते हैं। नये पुरानों से तीखे चले जाते हैं। बाप से पूरा योग लग जाये तो बहुत ऊँच चला जावेगा। सारा मदार है ही योग पर। नालेज तो बहुत सहज है। तुम फील करते हो बाप की याद में ही विघ्न पड़ते हैं। बाप कहते हैं भोजन खाओ तो भी याद में। परन्तु कोई दो मिनट, कोई 5 मिनट याद में रहते हैं। सारा समय याद में रहे बड़ा मुश्किल है। माया कहाँ न कहाँ भुला देती है। सिवाय बाप के और कोई की याद न रहेंगे तब ही कर्मातीत अवस्था होगा। अगर कुछ भी अपना होगा तो वह याद जरूर पड़ेगा। कुछ भी याद न आये। यह बाबा मिसाल है। इनको क्या याद आयेगा। कोई बाल–बच्चा, धन आदि है। सिर्फ तुम बच्चे ही याद आते हो। सो तो जरूर बाप को याद पड़ेंगे ही; क्योंकि बाप आये ही हैं कल्याण करने के लिए। याद सभी को करते हैं। परन्तु फिर बुद्धि फूलों तरफ ही चली जाती है। फूल अनेक प्रकार के होते हैं। कोई बिगर खुशबूएँ भी होते हैं। बगीचा है ना। बाप को बागवान, माली भी कहते हैं। यह तो तुम जानते हो सारी दुनिया जंगली जानवरों मिसल है। कितना क्रोध में आकर लड़ते–झगड़ते हैं। सन्यासियों में भी क्रोध बहुत होता है। थोड़ा ही बोलो तो बिगर पड़ते। बहुत देहाभिमान है। बाप समझाते हैं कब कोई क्रोध करे तो शान्ति में रहना चाहिए। क्रोध भूत है ना। भूत के आगे शान्त से रेसपान्ड करना चाहिए।

सर्व शास्त्रमई शिरोमणी श्रीमद्भगवद्गीता है। गीता है ईश्वर की मत की। एक होती है ईश्वरीय मत, आसुरी मत और दैवी मत। दैवीमत एक ईश्वर ही आकर बनाते हैं। मनुष्य मत से बदल कर दैवी मत बनाते हैं। राजयोग की नालेज देते हैं। फिर यह नालेज गुम हो जावेंगे। राजाओं का राजा बन गया फिर नालेज क्या करेंगे। 21 जन्म तो प्रारब्ध भोगते हो। वहाँ यह मालूम नहीं पड़ता कि इस पुरुषार्थ का यह फल है। अनेक बार तुम सतयुग में गये होंगे। यह चक्र फिरता रहता है। सतयुग त्रेता है ज्ञान का फल। ऐसे नहीं कि वहाँ ज्ञान मिलता है। बाप आकर ज्ञान दे भक्ति का फल देते हैं। यह भी बाप ने बताया है तुमने सबसे जास्ती भक्ति की है। पहले2 तुमने शिव की भक्ति की फिर देवताओं की। वह भी अव्यभिचारी भक्ति। फिर बहुत व्यभिचारी बन पड़े। भगवान को भी ठिक्कर–भित्तर में लगा दिया। इसको कहा जाता है अंधेर नगरी..... कह देते सभी भगवान ही भगवान है। यह है बिल्कुल बेसमझी। तमोप्रधान बुद्धि। पत्थर बुद्धि कहा जाता है ना। तमोप्रधान है पत्थरबुद्धि। सतोप्रधान है पारस बुद्धि। पारस बुद्धि से पत्थर बुद्धि, पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनना जरूर है। एक बाप को याद करते रहो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। इसमें है मेहनत। रचयिता बाप को और रचना के आदि मध्य अन्त को भी याद करो तो चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। भगवान बच्चों को भगवान भगवती बनावेंगे ना; परन्तु देहधारी को भगवान भगवती कहना रांग है। बाप एक देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं। बाकी ब्रह्मा देवताय नमः विष्णु देवतायनमः ..... जो कहते हैं उनको तो बाबा उड़ा दिया है। मुँझ पड़ेंगे ल0ना0 को भी देवताएँ, ब्र0वि0शं0 को भी देवता। वह यहाँ के रहवासी वह सूक्ष्मवतन के। दोनों को देवता कैसे कहेंगे। इसलिए बाप ने उड़ा दिया है। ब्रह्मा विष्णु और शिव का कितना अच्छा सम्बन्ध है। यह ब्रह्मा है, यह विष्णु भी बनने वाला है, और शिवबाबा की भी प्रवेशता है। तीनों है ना। बाकी शंकर को तो उड़ा दिया। सूक्ष्मवतन में ऐसे होते नहीं। वहाँ तो सफेद पोश होते हैं। उनको फरिश्ता कहा जाता है। तुमको भी फरिश्ता बनना है इसका सा0 होता है। बाकी कुछ है नहीं। वहाँ तुम सा0 में देखते हो मूवी चलती है। सायलेन्स मूवी। और यहाँ है टाकी। यह बाप बैठ समझाते हैं। यह है डिटेल। बाकी नटशेल में फिर भी कह देते हैं मन्मनाभव। मामेकम् याद करो।